ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 45- 47**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

आधुनिक दलित साहित्य के प्रमुख कवि : जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि

अजय कुमार, 2. प्रो. (डॉ.) शेखर शंकर मिश्र

शोध अध्येता, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, 2. विभागाध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, एम.पी.सिन्हा साईंस कॉलेज, मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-23.07.2025, Revised-30.07.2025, Accepted-07.08.2025 **E-mail : ajju204@gmail.com**

सारांशः ***जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि आधुनिक दलित साहित्य के प्रमुख रचनाकार हैं। वे कविता, नाटक, आत्मकथा, उपन्यास आदि विधाओं में समान रूप से दक्ष हैं। उनकी कविताएँ दलित जीवन की समस्याओं को रेखांकित करने के साथ–साथ प्रेम की प्रस्तावना भी करती है। दलित आंदोलन को दशा और दिशा देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका भी रही है। अपनी सृजनशीलता एवं रचनाशीलता के माध्यम से वे दलित साहित्य को नया आयाम प्रदान कर रहे हैं। मुख नायक 'कामना', 'घनी धूप के दिन', 'गंगा वाले देश का दुखान', 'दलित जाग गये हैं', 'दलित मशाल', 'दलित भारती', 'दलित पताका', 'दोहन', 'इंसान से ईश्वर तक', 'नयी रामायण', 'देव चरित', 'अपनी–अपनी जाति' आदि उनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। इस शोध–पत्र में उनकी रचनाओं के हवाले से उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– तेजस्विता, दलित आंदोलन, झगड़ालू, अन्तर्कलह, कुप्रथा, कामना, दलित मशाल, दलित भारती, दलित पताका।

परिचय – हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा पर दृष्टि डाली जाए तो यह स्पष्ट है कि विभिन्न कुप्रथाओं से उब कर नये सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलनों का जन्म हुआ। इन्हीं आन्दोलनों में एक आन्दोलन उभर कर सामने आया, जिसे हम 'दलित आन्दोलन' के नाम से जाना जाता है। हिन्दी साहित्य में दलित आन्दोलन का बहुआयामी पक्ष है। भारतीय दलितों के उत्पीड़न और समस्याओं को लेकर कई तरीके से विचार किये गए हैं। दलितों के विभिन्न समस्याओं को लेकर साहित्य के विभिन विधाओं में सृजन कर्म किया गया है साथ ही साथ सृजनवर्ग के व्यक्तित्व का भी निर्माण हुआ है। सृजनशीलता एवं गंभीर विमर्श साहित्यकार के व्यक्तित्व के निर्माण में सहयोग देता है। साहित्य के विभिन्न विमर्शों में हमेशा दलित साहित्य की रचना निरंतर हो रही है जो समाज में अपना विशेष स्थान बना रही है। इन रचनाओं का असर दलित समाज पर धीरे धीरे होने भी लगा है। अब दलित विमर्श और स्त्री विमर्श के लेखकों की छवि समाज में होने लगी है।

आधुनिक दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाने वाले जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि मूलतः प्रेम और क्रांति के कवि है। दलित साहित्य विमर्श को श्री महर्षि ने अपने लेखन कौशल से सम्पन्न किया है। महर्षि द्वारा लिखित दजनों पुस्तकें दलित साहित्य व समाज को समर्पित है।

मुख्य भाग – नवेन्द्र महर्षि के छोटे चाचा भी गेन्दा सिंह गन्ना के फैक्ट्री में मैकेनिक थे। गेन्दा सिंह की पत्नी सम्पन्न घर से आई थी। अपने तेज और उग्र स्वभाव के कारण नवेन्दु महर्षि की चाची ससुराल आते ही घर के शान्त माहौल को अन्तर्कलह में बदल दी जहाँ महर्षि जी के पिता छोटे से दर्जी थे वही चाचा फैक्ट्री में मैकेनिक थे दोनों के आय में काफी अन्तर था, इसलिए नवेन्दु जी की चाची छोटी–छोटी बातों को मुद्दा बनाकर नित्य दिन उनकी माँ से लड़ती रहती थी, इनकी चाची स्वभाव से ही झगड़ालू प्रकृति की थी, घर के आपसी कलह के कारण नवेन्दु की माँ की मानसिक–स्थिति बिगड़ गई और वह पगल सी हो गई। वह अपने छोटे बच्चे को साथ में लेती और गांव में निकल जाती, एक दिन अचानक ऐसा हुआ की उसने अपने छोटे बच्चे के साथ तलाब में डुबकर आत्महत्या कर ली। उस समय नवेन्दु महर्षि की उम्र महज नौ साल ही थी।

माँ के मृत्यु के कारण महर्षि जी के जीवन में दुखों का पहाड़ टुट गया, अब उनकी चाची का जुर्म और अत्याचार चर्म सीमा पर था वह कभी यह न समझ सकी की जिन माँ के बच्चे को कितना स्नेह और प्रेम की जरूरत है, उलटे उनकी चाची लड़ाई झगड़े के बहाने ढूंढती रहती थी, दूसरी तरफ घर में बड़े होने के कारण नवेन्दु जी को पढ़ाई के साथ–साथ घर के सारे कार्य भी करनी होती थी, पिता श्री का प्रेम–स्नेह बालक नवेन्दु पर सदैव रहा। पिता हमेशा अपने पुत्र का भला चाहता है, वह चाहते थे की बालक नवेन्दु मन लगाकर पढ़ाई करे और जीवन में बहुत अच्छा व्यक्ति बने, घर के कलह पूर्ण वातावरण को देखते हुए पिता ने बालक नवेन्दु को अपनी बेटी के ससुराल अलीगढ़ गांव में छोड़ आए, बालक नवेन्दु के बहन का परिवार भी बहुत बड़ा था। माँ–बाप पांच भाई दो बहने थीं। नवेन्दु जी को वहाँ नौवी कक्षा में हिन्दु इन्टर कॉलेज नामक विद्यालय में दाखिला मिल गया। नवेन्दु महर्षि को वहाँ पढ़ाई के साथ–साथ पशुपालन एवं खेतीबारी के कार्यों में भी अपना श्रमदान करना पड़ता था। कॉलेज से लौटने के बाद शाम को जंगल में चारा काटना, सभी मवेशियों को नहलाना, उन्हें चारा खिलाना, पानी पिलाना, रात में उन्हें मच्छर न काटे इसलिए सुखा चारा जलाकर धुआँ करना तथा सुबह जल्दी उठ कर सभी मवेशियों का गोबर भी साफ करना पड़ता था। इन्हीं कामों को करते करते सारा वक्त गुजर जाता था। वे आए थे बहन के घर पढ़ाई करने और मवेशियों के सेवा में ही अधिकांश वक्त गुजार देते, अन्तोत्वागत्वा नवेन्दु महर्षि नौवी कक्षा में फेल हो गए। यह पहली बार था जब वे फेल हुए थे नवेन्दु जी अपने बारे में सोचकर काफी चिन्तित थे की वह आए थे पढ़ाई करने और यहाँ दूसरे कामों में सारा समय नष्ट हो गया, आगे की पढ़ाई वह कैसे करेंगे। उन अरमानों का क्या होगा जो महर्षि के ह्रदय में पल रहे थे। फिर नवेन्द्र जी ने अपने ह्रदय की उथल–पुथल अपनी बहन को कह डाली क्योंकि वहाँ बहन के अलावा कौन था जो उनकी समस्याओं को समझ सकता था बहुत ने उनकी समस्याओं को दिल से लिया और उसके बाद से जब कोई घर का सदस्य नवेन्दु महर्षि को खेती के काम को कहता, बहन नवेन्दु जी का पक्ष लेते हुए मना कर देती। कहती, "नवेन्दु यहाँ पढ़ने के लिए आया है, काम करने के लिए नहीं, फिर उसका बाबा उसके खाने पीने का खर्चा भी तो देते है, तब वह काम क्यों करेगा? वह कहीं नहीं जाएगा, घर में बैठ कर अपनी पढ़ाई करेगा।"[1] "नवेन्दु महर्षि की बहन के घर में खाने–खर्चे की बहुत तंगी हो गई थी। कई समय तो खर्चाभाव में खाना भी नहीं बनता था। बहन को नवेन्दु जी का ख्याल आता तो पड़ोस से आटा लाकर कुछ रोटी बना देती थी। ऐसी स्थिति में नवेन्दु जी आधा पेट ही खाते थे। बच्चों की भी वहीं स्थिति थी। वे भी थोड़ा बहुत खाकर ही सो जाते थे, जबकि उनकी बहन कई कई दिनों तक बगैर कुछ खाए–पीए ही गुस्से और दुख से भरी घर के भीतर चुपचाप लेटी रहती थी।"[2]

इस प्रकार जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि के संघर्षपूर्ण और सफल व्यक्तित्व से हमारा परिचय हुआ। इस शोध अध्ययन में महर्षि जी के व्यक्तित्व को जान गए अब उनकी कृतियों के बारे में संक्षिप्त और सरल परिचय प्रस्तुत किया जायेगा। ऐसे ही हिन्दी साहित्य

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

में दलित विमर्श पर दलित लेखकों ने जमकर लिखा है। परंतु नवेन्दु महर्षि का योगदान अमूल्य है। दलित विमर्श की इनकी पहली रचना है 'दोहन'। जो प्रियदर्शनी प्रकाशन दिल्ली से 1984 में प्रकाशित ग्रामीण जीवन पर आधारित एक उपन्यास है। "जिसमें वहाँ के मुक्त वातावरण की खिलखिलाहटें है तो विवशता के बोझ में दबी सिसकियाँ थी। अतीत के प्रति संस्कार बद्ध प्रेम है तो वर्तमान के प्रति उभरता आक्रोश भी। संध्या बेला में मुखरित पक्षियों का स्वर संगीत है तो सूर्योदय की ओस भींगी मिट्टी का सोधापन भी।"[3]

नवेन्दु महर्षि जी की पहली कविता संग्रह 'कामना' नामक शीर्षक से 'प्रतिभा' प्रकाशन देहरादून से जनवरी 1980 ई. में छपी थी। ठीक एक वर्ष बाद 'एकान्त वीणा' नामक प्रेम काव्य संग्रह 1981 ई. में प्रतिभा प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। नवेन्दु महर्षि की अगली प्रकाशित पुस्तक है 'संसद तो स्वर्ण है' जो 2003 में मेधा बुक्स, दिल्ली से प्रकाशित दलित कविताओं का संग्रह है। यह कविता संग्रह दलित कविता में मील का पत्थर बन चुका है, जो सम्पूर्ण स्वर्ण कविताओं के सम्मुख हिमालय की तरह तन कर खड़ा है, जिसके भीतर की उर्जा तेजस्विता विरोधी कविताओं को पराभूत कर देती है, कवि नवेन्दु महर्षि वर्ण व्यवस्था की हिमायत करने वालों के खिलाफ सीधे जंग का ही ऐलान कर देता है। उदाहरण के तौर पर इसी की एक छोटी सी कविता प्रस्तुत है :

"रोटी की,
ना भात की
जंग यह तो
जात की।"[4]

इसी की अगली कड़ी में 'उपेक्षा के हरे हस्ताक्षर' नामक कविता संग्रह 2006 में मेधा बुक्स दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कवि महर्षि जी ने अपनी इस रचना में वैश्विक दृष्टिकोण को प्रकट किया है।

2006 में ही अगली काव्य संग्रह 'सितारों का ज्योतिर्मताज' नाम से मेधा बुक्स दिल्ली से आई। इस काव्य संग्रह में कुल चौहत्तर कविताएँ है जिसको कवि ने 'शान्ति पथ' और 'संघर्ष पथ' दो अलग–अलग नाम दिया है। शांति पथ में कविताओं का स्वर कोमल है, तो संघर्ष पथ में सख्त है। नवेन्दु महर्षि का यह कविता संग्रह जो उच्चाई लेकर आया है, वह किसी कवि के लिए ही संभव हो पाती है। दलित कविताओं की तो इसे एक बड़ी उपलब्धि ही कहा जाएगा। इस संग्रह की कविताओं द्वारा संवेदना का और भावना रूपी सितारों का जो सतरंगी जगमग प्रकाश आसमान से धरती पर उतरा है, यह कभी बन्द नहीं होगा। कवि का यह कविता संग्रह के भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं वरन् समूची मानवता के माथे पर ज्योतिर्मय ताज के शताब्दियों तक यूँ ही जगमगाता रहेगा।

अगली कविता संग्रह 'चाँद उग चुका है' नामक शीर्षक से 2011 में 'प्रखर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई। "इस सग्रह में कुल तेरह कविताएँ है। इन कविताओं का भी धरातल और क्षितिज सार्वभौमिक और सार्वकालिक ही है। लेकिन यह सार्वभौतिकता और सार्वकालिकता ओढ़ी हुई या काल्पनिक नहीं है। वरन् यह जीवन अनुभवों के दग्धमय दानावल को पार करने पर ही प्राप्त हुई है।"[5]

नवेन्दु महर्षि का अगला काव्य संग्रह 'दलित जाग गए हैं' नाम से 2011 में ही प्रखर प्रकाशन दिल्ली से हुआ। 'दलित मशाल' नामक कविता संग्रह 2012 में प्रखर प्रकाशन दिल्ली से आया। उसके बाद महर्षि जी ने 2012 में ही 'दलित भारती' नामक काव्य संग्रह प्रकाशित करवाया। "इस पुस्तक के पहले भाग की कविताओं में राष्ट्रवादी भावनाओं का जैसे की देशप्रेम, देश भक्ति, देश निष्ठा और देश बलिदान के प्रति गहनतम मनोभावों का प्रकटीकरण हुआ है। जबकि इसके दूसरे भाग दलित अस्मिता की कविताओं में दलित समाज के दुख दर्द और संत्रास के भेदभाव और अन्याय के दमन और उत्पीड़न के और इस स्वतंत्र हिन्दुस्तान में मची रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, घोटाले, अवसरवादिता और नीति नियमों की अवहेलना भरी अफरा–तफरी के दिग्दर्शन होते हैं।"[6]

जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि ने कविता उपन्यास, कहानी के साथ–साथ अपनी वृहद आत्मकथा भी लिखी है, जो पाँच भागों में प्रकाशित है, महर्षि जी के आत्मकथा के पहले भाग का नाम 'इंसान से ईश्वर तक' है जो वर्ष 2006 में प्रखर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई, इसमें लेखक ने मनुष्यों को सदकर्मों की ओर इंसार किया है, व्यक्ति साफ मन से छोटे–छोटे भलाई के कार्यों को निरन्तर करते हुए इसी धरती पर इंसान से ईश्वर तक का सफर पूरा कर सकता है।

महर्षि जी के आत्मकथा के दूसरे भाग का नाम 'मेने मन की बाइबिल' है। बाईबिल जैसे अपने मन को पवित्र मानते हुए महर्षि नवेन्दु जी ने अपने जीवन के सम्पूर्ण घटनाक्रम को अपनी दूसरी आत्मकथा में लिखा है, 2007 में यह प्रखर प्रकाशन से प्रकाशित हुई।

इनकी आत्मकथा भाग तीन 'रूकी हुई रोशनी' नाम से वर्ष 2011 में प्रखर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस आत्मकथा को महर्षि जी ने 'अने माता–पिता को समर्पित किया है। इस आत्मकथा भाग तीन में लेखक ने अपने बम्बई फिल्म सिटी के संघर्ष व अनुभवों को व्यक्त किया है।

महर्षि जी की आत्मकथा का चौथा भाग 2012 में प्रखर प्रकाशन से ही 'कुछ काँटे कुछ फूल' नाम से प्रकाशित हुआ। इस आत्मकथा को नवेन्दु महर्षि जी अपनी माँ भगवान देई को समर्पित किया है। जिसने परिवारिक कलह के चलते छोटे भाई और समेट गाँव के तलवार में डुबकर आत्महत्या कर ली थी। साथ–साथ ढाई वर्ष चले अपने प्रेम के घनीभूत पीड़ा को भी व्यक्त किया है। महर्षि जी के आत्मकथा का पांचवा और अंतिम भाग का प्रकाशन वर्ष 2012 में प्रखर प्रकाशन दिल्ली से 'मेरा बचपन मेरा संघर्ष' नाम से प्रकाशित हुआ। इस आत्मकथा को नवेन्दु को अपने पिता श्री गिरधारी सिंह जी को समर्पित किया है। इनके पिता का देहावसान इनके मुम्बई प्रवास के दिनों में इनके बहन के घर हो गया था। इस अंतिम आत्मकथा में नवेन्दु महर्षि ने "अपने बचपन के संघर्ष बेरोजगारी के तल्ख अनुभव और पिता और छोटे भाई के दिक्कत परेशानी के अनुभवों को मिलाकर प्रस्तुत किया है।"[7]

नवेन्दु महर्षि की अगली कृति 'अपनी–अपनी जाति' नाम से वर्ष 2011 में प्रखर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित दलित जीवन की कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ है। कहानी संग्रह में कहानी का क्रम इस प्रकार है– 'चण्डीप्रसाद', 'मंदिर प्रवेश', 'जुलूस' और कितने द्रोणाचार्य, थप्पड़, मुख्यमंत्री, कत्थई कप में चाय, रोग मुक्ति, गुण्डा, मुखौटा, कलक्टर, अपनी–अपनी जाति', आदि।"[8]

नवेन्दु महर्षि की कहानियाँ दलित प्रवेश को प्रकट करती है और दलित जीवन को प्रतिबिंबित करती है। नवेन्दु महर्षि की सभी कहानियाँ किसी न किसी यथार्थ घटना पर आधारित है जैसे कि चण्डीप्रसाद नामक कहानी नवेन्दु महर्षि के छोटे भाई के वजीफे के प्रसंग से जुड़ी है तो दूसरी थप्पड़ नामक कहानी के भुक्तभोगी खुद नवेन्दु महर्षि के पिता रहे हैं। ऐसे ही रोग मुक्ति कहानी भी नवेन्दु जी के विद्यालय के एक चपरासी पर ही आधारित है तो 'काथई कप में चाय' की कहानी भी नवेन्दु जी के एक स्वर्ण मित्र द्वारा बताई गई एक सच्ची घटना से प्रेरित है। इसी प्रकार 'कलक्टर' कहानी भी नवेन्दु जी के एक सहपाठी से जुड़ी है जिसका नायक दूसरों की सहायता और मदद से उन्हें सिढ़ी बनाकर कलक्टर बन जाता है ओर कैसे सब कुछ भुलकर ब्राह्मण समाज में शामिल हो

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

जाात है। दलित की दयनीयता और स्वर्ण की दबंगता का अद्भुत मिशाल नवेन्दु जी के कहानियों में मिलता है। नवेन्दु महर्षि जैसे प्रखर दलित लेखक समाज की खामियों का पर्दाफाश करता है और दलित मुक्ति के लिए प्रयासरत रहता है।

लेखपाक जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि जी की अगली कृति 'ब्राह्मण की बेटी' नाम से सन् 2011 में प्रखर प्रकाशनप दिल्ली से प्रकाशित दलित कहानी संग्रह है। इस कहानी को सम्मिलित कर इस कहानी संग्रह का निर्माण किया गया है। कहानी इस प्रकार है : ""मिडडे मील', 'जात बाहर', 'जाति–पूछनेवाली लड़की', 'बुद्ध ने कहा था', 'ब्राह्मण की बेटी', 'नन्हा धावक', 'जिहाद', 'घंटाघर चौक', 'झाड़ूवाली', 'दो बीघा जमीन'।"[9]

"नवेन्दु जी की इस संग्रह की कहानियाँ भी किसी न किसी यथार्थ घटना पर ही आधारित है। जैसे कि 'ब्राह्मण की बेटी' नामक कहानी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में घटित एक घटना से प्रेरित है तो 'जिहाद' कहानी गढ़वालन में घटित एक वास्तविक घटना पर आधारित है जिसमें एक दलित महिला के साथ मन्दिर का पुजारी और एक आवारा युवक द्वारा मंदिर के अंदर कामवासना का नंगा खेल खेला गया। इतना ही नहीं उस दलित महिला के साथ अगले दिन भी गाँव के दो और युवकों के साथ उन दोनों ने शराब और कबाब खाएँ और आधी रात तक उस लाचार के साथ शराब में धूत होकर चारों ने उसे अपनी हवस का शिकार बनाया और अपनी मनमानी करते रहे।"[10]

निष्कर्ष – नवेन्दु जी की प्रत्येक कहानी समाज को अगाह करने का कार्य करती है। दलित वर्ग की समस्याओं को निजात दिलाने का भरपूर प्रयास करती है। महर्षि नवेन्दु ने दलित एवं उनपे हुए जुल्मों को ध्यान में रखकर दर्जनों कहानियाँ लिखी हैं। इनके प्रत्येक कहानी दलित के किसी न किसी समस्या को समाज के सम्मुख परोसने का कार्य करती है साथस ही इनकी अवगिनत कहानियों का मकसद केवल यथार्थ दर्शन ही नहीं रहा है बल्कि उससे आगे बढ़कर समाधान की भी कोशिश की है।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. मेरा बचपन मेरा संघर्ष, लेखक नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ. 14.
2. मेरे मन की बाइबिल, लेखक नवेन्दु महर्षि, मेधा बुक सेन्टर, नई दिल्ली, पृ. 38.
3. 'दोहन', नवेन्दु महर्षि, प्रियदर्शिनी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987, पृ. 01 (अपनी बात)।
4. सितारों का ज्योतिर्मय ताज, नवेन्दु महर्षि, मेधा बुक्स, नई दिल्ली, 2008, पृ. 07.
5. चाँद उग चुका है, नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 2011, पृ. 08.
6. दलित भारती, नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, 2012, कवर पेज।
7. 'मेरा बचपन मेरा संघर्ष, नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ. 08.
8. अपनी–अपनी जाति, नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 8 (अनुक्रम)।
9. 'ब्राह्मण की बेटी, नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 11 (अनक्रम।)
10. 'ब्राह्मण की बेटी, नवेन्दु महर्षि, प्रखर प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 09 (अनक्रम)।

*****